अंतर्ज्योति

(काव्य संग्रह)

श्रीमती उमा सुहाने

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-83-3"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९

(मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१९- श्रीमती उमा सुहाने

आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी

मूल्य - ६०.०० रुपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

ANTARJYOTI BY UMA SOHANE

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

	अंतर्ज्योति	5
1.	प्रभु वंदना	7
2.	विनती	8
3.	क्षमा याचना	9

4. 'अंतर्ज्योति' तत्व ज्ञान 10
5. पंचतत्व में राम 11
6. अलौकिक शक्ति पुंज 12
7. अनमोल भंडार 13
8. नवधा भक्ति राम की 14
9. अंतर्मन में राम दर्शन 15
10. अंतस्वरूप का चिन्तन 16
11. अंतर्ज्योति आधार 17
12. राम आनंद सागर 18
13. दीपज्योति राम 19
14. राम ! शीतल चंद 20
15. राम ही सूर्य 21
16. अंतर्ज्योति जगाने वाले राम 22
17. जीवन का सत्य 23
18. सीख ले बंदे 24
19. मीठे बोल अनमोल 26
20. अंतर्मन में गुरू 27
21. भाव में भगवान 28
22. लोकतंत्र के महानायक 'राम' 29
23. गीता सार 30
24. मेरा अवगुण भरा शरीर 32

अंतर्ज्योति

पुस्तक परिचय

विभिन्न विषयों में लगे चंचल मन को सन्मार्ग की ओर लगाने की अंतःशक्ति ही अंतर्ज्योति है। यह भीतरी प्रकाश हृदय के सुविचारों को मानस पटल पर स्थिर रखते हुए भगवद प्रेम के अनुपम रस में निमग्न हो परम शांति देता है। यह अखंड आनंद का पुंज है।

अंतर्ज्योति में भक्त और भगवान के बीच गहरा संबंध बताया है और शुभ संस्कारित भावों को मन बुद्धि से जोड़ते हुये परम शक्ति का बोध कराया गया है।

मुझे विश्वास है कि इसे पढ़कर पाठकों का अंतःकरण हरिदर्शन व जीवन सार तत्वों से अभिभूत होगा और नयी अनुभूति स्फूर्ति के साथ मनन करके आत्मज्योति जागृत करेंगे।

रचनाकार

श्रीमती उमा सुहाने

प्रभु वंदना

गणपति की कर वंदना, गुरू को शीश नवाय।
शिव गौरी का ध्यान धरूँ, हृदय में प्रेम बसाय।।

अंजनि पुत्र हनुमान को, सुमिरौ बारंबार।
हाथ जोड़ विनती करूं, राम कृपा आधार।।

राम कथा सुखदायिनी, देती मन मुस्कान।
इच्छा राम गुणगान की, पूर्ण करो भगवान।।

अगम अगोचर राम तुम, पार ब्रम्ह अवतार।
नील वर्ग सुंदर छटा, अंग विभूति अपार।।

तन पीताम्बर सोह रहा, उर बैजन्ती माल।
धनुष बाण कर में लिए, शोभा बनी विशाल।।

कनक सिंहासन सिय सहित, बैठे हैं श्रीराम।
सियराम युगल चरण में, शत शत बार प्रणाम।।

हिय मंदिर में दीप धर, भक्ति की ज्योति जलाय।
श्रद्धा प्रेम प्रकाश, राम की महिमा गाय।।

मंद बुद्धि मैं रामजी, कर न सकूं गुणगान।
फिर भी करूं प्रयास मैं, क्षमा करो भगवान।।

विनती

रोम रोम में रमे रहो, प्यारे सीता राम।
दूर करो अवगुण मेरे, सेवा करूं निष्काम।।

राम नाम प्रकाश में, दिखती मंगल राह।
झूठे जग की चमक में, मन न हो गुमराह।।

दृग देखें छबि राम की, मुख बोले सियराम।
कान सुनें राम ध्वनि, हृदय बसो हे राम।।

हाथ जोड विनती करूं, सुनो अयोध्यानाथ।
जग नदिया की भंवर से, खींचो मेरा हाथ।।

जब तक जीवन राम भजूं, पूरी करिओं आस।
तन को जब प्राण तजें, नैनों के रहियों पास।।

सिया राम जै जै राम।।

क्षमा याचना

बुद्धि मेरी तिल भर है,
राम गुण अगम अपार।

कैसे महिमा गान करूं,
नहिं शब्द सुमन विस्तार।।

जो भी मुझसे भूल हो,
क्षमा करो रघुनाथ।

शरण तुम्हारी मैं सदा,
लाज रखो हे नाथ।।

'अंतर्ज्योति' तत्व ज्ञान

सुंदर सरस शब्द अंतर्ज्योति आया।
किंतु जानो इसमें क्या अर्थ समाया।।

जिससे मानव विकार दूर हों, कोई दुर्गुणों की न हो छाया।।
अंतर्विषय, राग द्वेषादि मिटे, रोग निरोग बने यह काया।।

काम, क्रोध, मद लोभ मोह, व्यभिचार हैं नरक के पंथ।
कलुषित जीवन न अपनायें, बने निर्विकारी जीवन का अंग।।

दुर्गुणों से ऊपर उठकर, मस्तिष्क में राम पर जोर।
कुविचारों की बलि चढ़ायें, परमार्थ का ही होवे शोर।।

जब ज्योति जले ज्ञान की,चहुँ ओर फैले उजियारा।
दया, प्रेम और मानवता से,आलोकित हो जग सारा।।

ममता करूणा से गले लगाओ,हर जीव जंतु पर बनो उदार।
पुण्य पताका तेरी फहरायेगी,खुलेगें तभी अंतर्दृष्टि के द्वार।।

सद्गुणों की गंध जब महके,शुभ संस्कारों का मान बढ़े।
घृणित कार्यों से मुख मोड़ो,सेवा और नेकी का हाथ बढ़े।।

भले-बुरे, ऊँच-नीच, भेद न हो,प्रभु की अन्तरशक्ति का ज्ञान रहे।
श्रद्धा भक्ति भाव से निशिदिन,अंतर्मन में हरि का ध्यान रहे।।

पंचतत्व में राम

जल, अग्नि, वायु, गगन, धरा बसे हैं राम।
राम शब्द अति गूढ़ हैं, राम नाम सुखधाम।।

नील गगन छबि राम की, हृदय में प्रेम विशाल।
प्रभु का रूप निहार के, मन को करो निहाल।।

बहती वायु राम कृपा से, शीतल मंद सुगंध।
मन आल्हादित कर देता, शुद्ध हवा रूप सत्संग।।

अग्नि तपन भी राम हैं, राम ही दिव्य प्रकाश।
राम के तेज पुंज से, भस्म होवें पाप विनाश।।

राम नाम के नीर से, निर्मल होत सुभाय।
राम गंग की धार से, सहज पार हो जाय।।

चलती सृष्टि राम दया से, अवनि और आकाश।
हरी भरी वसुंधरा राम की, हरती प्रलय विनाश।।

राम नाम की रोशनी, देता जीवन प्रान।
सांझ सबेरे निशिदिन, याद करो भगवान।।

अलौकिक शक्ति पुंज

तीन लोक चौदह भुवन, सकल विश्व आधार।
वेद पुराण भी कह रहे, श्रीराम रचे संसार।।

श्रीराम शक्ति संयोग से, ब्रम्हा सृष्टि रचायें।
विष्णु जग पालन करें, शिव संहार करायें।।

राम कृपा दृष्टि से, मूक होय वाचाल।
पंगु पर्वत में चढ़ें, मिटे रोग जंजाल।।

श्री राम रूप अग्नि हैं, राम हैं मंगलचार।
राम ही शुभ लाभ हैं, राम विपत्ति निवार।।

राम ताल में कमल हैं, कीचड़ है संताप।
राम फूल गुलाब का, कांटे हैं, जगताप।।

राम शब्द महाकोश से, मिट जाते सब पाप।
रामचरण की धूलि से, छूटी अहिल्या शाप।।

जग जहाज तूफान में राम है खेवनहार।
प्रभु पुकार सुनते सदा, करते भव से पार।।

राम नाम संजीवनी, दुस्कर रोग मिटाय।
पी ले उसको प्रेम से, तन मन से हर्षाय।।

अनमोल भंडार

राम नाम पारस मणि, राम नाम अनमोल।
अंतरमन से छू गया, तन मन जाये डोल।।

हीरे मोती राम ही, राम अमिट भंडार।
संत समागम से मिले, लूट ले ये संसार।।

राम नाम मुक्ता मणि, राम नाम ही मूल।
राम नाम माला करो, मिट जायें जग के शूल।।

सोना चांदी भी राम है, राम नाम नवरत्न।
चोर चुरा न पायेगा, कर ले लाख प्रयत्न।।

अखिल विश्व ब्रम्हांड की है ये बहुमूल्य संपदा।
राम सागर में गोते लगाओ, रत्न मिलेंगे सर्वदा।।

राम नाम सबसे बड़ा, जप ले मानव देह।
राम की महिमा गान से, मुक्ति निःसंदेह।।

दाता राम प्रबल बड़े, दीन्हो विभीषण राज।
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता दीन्हे साज खाज।।

नवधा भक्ति राम की

श्री राम रूप निहार के कर लो आँखें बंद।
मन दर्पण दर्शन करें, मिले परम आनंद।।

नित्य कंठ जो राम कहे, सर्वसिद्धि पा जाय।
राम स्वरूप का गान ही, भक्त के कष्ट मिटाय।।

राम नाम जपते हुये, तू प्रभु सागर में डूब।
संकट जब भी आन पड़े, कांटे बन जाये दूब।।

दीन हीन अधीन के राम ही दयानिधान।
अर्न्तभाव से सेवा करें, मिटते दोष महान।।

राम कृपा ऐसी करे जल में जैसे मीन।
करो समर्पण राम को, तन मन तल्लीन।।

राम नाम सत्संग करो, भजो प्रभु के गीत।
जनम परण और मरण में उनसे बड़ा न मीत।।

झूठा सुख वैभव सभी, पानी सा बह जाय।
काम, क्रोध, मोह त्याग के, राम का हो जाये।।

राम भक्ति ऐसी करें, हर सांस पुकारे राम।
सोते, जागते, स्वप्न में, सर्वत्र राम का नाम।।

अंतर्मन में रामदर्शन

राम महिमा गाय के भर लो मन में प्यार।
हर योनि से मुक्ति मिले, जग से हो उद्धार।।

राम नाम धुन गूंज से, भव भय जाते भाग।
भक्त हृदय जब प्रीत बढ़े दिन दूना अनुराग।।

चार अवस्था, चार घड़ी पल में निकली जाय।
अंतर्मन में राम बसा ले जीवन व्यर्थ न जाये।।

राम अनाथ के नाथ हैं, भक्तों के भगवान।
करूणा सागर दीन के, मूढ़ को देते ज्ञान।।

सियाराम सुंदर छवि, हृदय के बीच बसाय।
अंतर्दृग दर्शन करें, मन प्रफुल्ल हो जाये।।

भक्तमन की डोर बंधे लिया मनुज अवतार।
पूर्ण करें मनकामना, प्रभु राम हैं फलदातार।।

श्रीराम दीवानी शबरी, नित ही बुलाये राम।
अंतर्मन पुकार सुनी, प्रभु धाये उसके धाम।।

जो जपें सच्चे भाव से, करते उनका कल्याण।
राम नाम की शिला भी, तब तेरे फूल समान।।

जिस दिल में राम नहीं, जीवन वह बेकार।
मत भूलो श्रीराम को, कर लो प्रेम पुकार।।

अंर्तस्वरूप का चिन्तन

राम स्वरूप को जान ले, उनकी लीला महान।
राम बिना जग शून्य है, ऐसा तात्विक ज्ञान।।

राम नाम के तेज से, कटे अमंगल रेख।
भक्ति भाव की तूलिका, लिखती कर्म सुलेख।।

राम नाम रक्षा कवच, राम हैं बल के धाम।
शरण में इनकी जो पड़े, बनते बिगड़े काम।।

न ढूंढो श्रीराम को, कस्तूरी सम हैं राम।
मन मृग खोजत बाहरे, हृदय बसत श्रीराम।।

राम तट में खड़े रहो, मत लेना विश्राम।
जग नदिया में नौका बन पार करेंगे राम।।

शरण पड़े को दे प्रभु, सदा सुयश सम्मान।
राम कृपा अनुराग से मिलता है अमृतपान।।

निश्चल मन से चिंतन करो, दो अक्षर में राम।
मुख खोलो अरू बंद करो, जप जाता प्रभु नाम।।

राम कथा वाचन, श्रवण मन चमन खिल जाये।
अवगुण सारे दूर हो, और ज्ञान चक्षु खुल जायें।।

राम नगरिया दूर नहीं, अंतर्मन बसते राम।
पुण्य की पूंजी जोड़ के जाना प्रभु के धाम।।

अंतर्ज्योति आधार

अंतर्ज्योति जगाने वाले,मन को राह दिखाने वाले।
मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम,तुमको बारम्बार प्रणाम।।

राम ही चंदा राम दिनेश,पूरी करें आस अवधेश।
राम ही दीपक राम ही सागर,सबकी भरते खाली गाघर।।

राम ही श्याम, राम, नारायण, वाल्मीकि ने लिखी रामायण।
राम ही धरती, राम आकाश, पूरी करते जग की वे आस।।

राम कृष्ण गीता आधार, सबकी नैया करते पार।
राम ही धर्म, राम ही कर्म, राम ही दुनिया का सद्धर्म।।

राम हैं लोकतंत्र के नायक, अष्ट सिद्धि नव निधि दायक।
राम ही तीरथ चारों धाम, चरणों में शत-शत प्रणाम।।

राम आनंद सागर

राम अंतर्मन की ज्योति,
जैसे सागर सीप में मोती।

सागर मध्य उछलती लहरें,
हिला देती बाँध की डोरें।

उदधि लाँघ हनुमान पहुँचाया,
लंका में विजय ध्वज फहराया।

आज भी रामरूप है धारा,
राष्ट्ररक्षा का भार संभारा।

राम सागर में रत्न अनेक,
कार्य करो तुम भक्तों नेक।

भक्तों की कर दो नैया पार,
कृपा आपकी देखेगा संसार।

जितनी गहरी लोगे डुबकी,
उतनी ही पाओगे संतुष्टि।

दीपज्योति राम

राम रूप दीप की अंतर्ज्योति से,
होता अहंकार का नाश।
जगमग करता दीप प्रखर,
पावन स्नेह भरा विश्वास।।

घर महल हो या कुटिया,
जब मानुष हृदय दीप जले।
मन विकार सब दूर हों,
सद्गुणों की खान मिले।।

घर आँगन में दीप प्रकाश,
लाये खुशियों का डेरा।
मिटे दूरियाँ जाति धर्म की,
न हो ऊँच नीच का घेरा।।

दिया तले न रहे अंधेरा,
दूजों का सुख गहरी बात।
हटे बाधा व्याधा जन-जन की,
अंतर्मन में हो मिलन आस।।

राम ही शीतल चंद

राम की चंद्र रूप शीतल किरणें,
उनसे अंतर्ज्योति जगमगा उठे।

ताप मिटाती निषा गगन में,
अगणित तारे झिलमिला उठे।

यदि प्रदेश के नेता में भी,
सरल शीतल भाव समायें।

स्वच्छ चाँदनी सा निर्मल मन,
जन जनहित में ही वह हर्षाये।

राम की सौम्य शीतल छवि,
मीठा विनम्र सा सद्व्यवहार।

यदि हो परिवार, समाज देश में,
तो बढ़ेगे सदा मंगल संस्कार।।

राम ही सूर्य

राम सूर्य स्वरूप में, देते दिव्य प्रकाश।
सारे भू मंडल में हो जाता तम का नाश।।

राम के तेज पुंज से तन मन की व्याधि दूर।
जग को रोशन कर आंखों में चमकाता नूर।।

रामरूपी सूर्य स्थिर रह, करे जगत कल्यान।
पृथ्वी काट रही चक्कर, कृपा करेंगे दयानिधान।।

चारों दिशा बिखेरे धूप, न करते वे विश्राम।
महल हो झोपड़ी सब में उसकी नजर समान।।

सूर्य प्रखर ज्वाला में, भी दिया राम ने शुभ संदेश।
उनके कर्म धर्म का अवलोकन कर लें भारत देश।।

सूर्य वंष में जन्म लिया, सूर्य समान ही है तेज।
बसा लो उनकी दिव्य मूरत मिट जायेगा मतभेद।।

अंतर्ज्योति जगाने वाले राम

आयी शरण तुम्हारी राम, मेरी विनती स्वीकारिये।
इस अंतर्मन मंदिर में सत्य का वास कराइये।।

जग अगम, अगाध सिंधु है हाथ पकड़ ले जाइये।
डूबती मंझधारों में भी गजराज की भांति उबारिये।।

निर्माणों की इस दुनिया में, चरित्र निर्माण न भूलूँ।
स्वार्थ साधना की आँधी में, तनिक भी न डोलूँ।।

पग-पग पर मैंने प्रभु मधुर मधुर सपने संजोयें।
स्वार्थ, त्याग, परहित, फूलों के माल भी पिराये।

अज्ञानता के उपवन में तुम्हारी ही खुशबू फैलाऊँ मैं।
ममता करुणा सेवा साहस से अंतर्ज्योति जलाऊँ मैं।।

आयी शरण तुम्हारी राम, मेरी विनती स्वीकारिये।
इस अंतर्मन मंदिर में, सत्य का वास कराइये।।

जीवन का सत्य

दो दिन का जीवन प्राणी मत करना अभिमान रे।
नेकी राहो में चलकर, तू हरि को पहचान लें।।

जीवन घड़ियाँ व्यर्थ न खोना।
सहज नहीं मानव जन्म सलोना।।
सुख दुख की छाया रहती, मन बनाना तू नादान रे।
दो दिन.....

कभी किसी से बुरा न बोलो।
सद्व्यवहारों की गठरी खोलो।।
ऐसे पगचिन्ह बनाना तुम, चलना चाहे हर इंसान रे।
दो दिन.....

मतलब का है यहाँ याराना।
स्वारथ से भरा पड़ा जमाना।
चिकनी चुपड़ी बातों से रहना सदैव तू सावधान रे।
दो दिन.....

बड़ों के अनुभव सीख समझ लो।
शुभ कर्म रीति नीति भी सुन लो।।
अनचाही बातों से रहना साथी तू अनजान रे।
दो दिन.....

न जाने कब आ जायेगा बुलावा।
छोड़ के जाना पड़े निर्मल काया।।
परहित कर तू जग में वंदे, अंतर्मन में प्रभु ध्यान रे।

सीख ले बंदे

कुछ सीख बंदे, सीख ले बंदे, जीवन का इस नीति को।
करते करते जाने की बेरा, फिर क्या सोचे तू बीती को।।

मुंह के कड़वे मीठे बोल बनाते अपना और पराया।
चंद दिनों का जीवन प्यारे छोड़ के जाना काया।।

न कोई तेरा न कोई मेरा, जग है रैन बसेरा।
हंस लो और हंसा लो बंदे, बने चैन का डेरा।।

जिस माता ने जन्म दिया उसकी ममता निंदित न करना।
पिता की छांव में रहकर उनका प्यार न लज्जित करना।।

झूठी माया के चक्कर में क्यों जीवन व्यर्थ गंवाना।
पैसे की इस चकाचौंध में क्यों परिवार प्रेम जलाना।।

जिस सुख संतान के खातिर, माँ बाप का करते अपमान।
सोचो औलाद देख रही है, क्या देगी वह तुमको सम्मान।।

अरे बड़ों को शीश झुकाकर, रहो हमेशा सेवा को तैयार।
छोटो को क्षमाकर गले लगाओ, दो उनको भरसक प्यार।।
काम क्रोध मद लोभ त्याग कर, कर्मठ बन आगे आओ।
त्याग तपस्या की अग्नि में तपकर, सबका मन हर्शाओ।।

अपने कर्तव्यों के मोती की माला गुंथकर गले पहनाओ।
निन्दनीय कृत्यों के टूटे मोती तुम अपने पैरों तले दबाओ।।

पूनम के उजियाला जैसी, शीतल किरणें बिखराओ।
मधुवन के गुलाब बन सदगुणों की महक चहुँ ओर फैलाओ।।

ऐ मानव ये जीवन तेरा क्षणभंगुर पानी का बुलबुला।
जी भर खुशियाँ दे तू, जीवन पंचतत्व में जाये घुला।।

जांत-पांत का भेद मिटाकर, सब पर तुम उपकार करो।
सर्वधर्म है एक समान तुम, सब जीवों से प्यार करो।।

सुख से जीवन जीना है तो, ज्ञान गंगा की राह चलो।
अगर पार होना भवसागर, तो परमेश्वर का ध्यान धरो।।

मीठे बोल अनमोल

मीठा मीठा बोल रे मानव तेरा क्या घट जायेगा।
ईश्वर के घर सब को जाना, झूठ धरा रह जायेगा।।

चाहे कोई रोष दिखाये, चाहे कोई जोश दिखाये।
तू मन में धीरज रख ले मानव, काम संवर जायेगा।।

चाहे कोई आँख दिखाये, चाहे कोई डाँट बताये।
तू मन में शान्ति रख ले मानव, प्रेम छलक ही जायेगा।।

चाहे कोई हंस के जी ले, चाहे कोई रो के जी ले।
घटती जाये उमर तेरी ये, समय निकलता जायेगा।।

चाहे कोई राम बोले चाहे कोई अल्ला बोले।
धर्म खाते में सब जाना, पाप धरा रह जायेगा।।

चाहे कोई धन दे चाहे कोई मन दे चाहे प्यार खजाना दे दे।
अब जग की चाकरी छोड़ दे मानव, राम तेरा हो जायेगा।।

अंतर्मन में गुरू

सुनलो मानव गुरू से ज्ञान।
न रहना तुम इनसे अनजान।।

झूठे जग का है झूठा ज्ञान।
मत करना प्राणी अभिमान।।

छोड़ो घर के सारे काम।
सुनलो मानव गुरू का ज्ञान।।

कदम-कदम पर यहाँ है काँटे।
तेरे दुख कोई न बांटे।।

लगा लो प्यारे मानव ध्यान।
सुनलो अपने गुरू का ज्ञान।।

दुनिया की ये चंचल राहें।
जो इनसे उबरना चाहे।।

बोलो हृदय से राम राम।
दूर करो सब खोटे काम।।

गुरू ज्ञान से अन्तरशुद्धि पाओ।
तन मन अपना प्रभु में लगाओ।।

पी लो अमृतवाणी रस जाम।
अंतर्ज्योति को करो प्रणाम।।

भाव में भगवान

भाव के भूखे हैं भगवान, भाव ही बस सार।
भाव से जो भजते उन्हें भव से हो बेड़ापार।।

भाव आगे चाह नहीं, वस्त्र धनादि अलंकार।
बस श्रद्धा प्रेम रसपान, प्रभु को मान्य सत्कार।।

वे लेते नहीं कुछ बस मन की सच्ची पुकार।
एक पुश्प भी प्रेम का वही उन्हें स्वीकार।।

जो जग का सहारा तज, जाना प्रभु के द्वार।
भरते उसकी झोली में, न जाने कितना उपहार।।

भाव भरे भक्त का प्रभु पर पड़ता अतिभार।
उनकी विनती सुनते ही, हो जाते हरि लाचार।।

भाव जनित भक्त, भगवान का एक ही भार।
तभी तो लेते है भगवान पृथ्वी पर अवतार।।

लोकतंत्र के महानायक 'राम'

त्रेतायुग में भू लोक पर, हुये वीर महाराजा अनेक।
लोकतंत्र के महानायक श्रीराम ही उनमें हैं सर्वश्रेष्ठ।।

प्रथम बार संतहितार्थ किया वन को जब प्रस्थान।
विश्वामित्र सम महाज्ञानी से पाया जनसेवा का ज्ञान।।

वीरों का अहंकार तोड़ने, पूर्ण किया था जनक संकल्प।
परशुराम की क्रोधाग्नि शान्ति का दिया अनूठा नम्र विकल्प।।

वंश परम्परा हेतु सहर्श राज सत्ता का परित्याग किया।
वन्य प्राणी, नदी, पर्वत, वनवासियों को भी सम्मान दिया।।

अधर्म, असत्य पर विजय हेतु असुर वंश को नष्ट किया।
फिर अग्नि परीक्षा ले सीता की, प्रजा को संतुष्ट किया।।

राज्याभिषेक हुआ राम का, वे चक्रवर्ती सम्राट बने।
तब अवधवासियों के वाकबाणों के तीक्ष्ण प्रहार सहे।।

जनसुख, जनहित, लोकतंत्र के आगे श्रीराम मौन हुये।
पत्नी सीता का परित्याग किया, राजतंत्र श्री गौण हुये।।

धरती माँ की गोद बैठकर भूमिपुत्री ने पुनः सतीत्व प्रमाण दिया।
अंततः अश्रुपूरित नैंनो से राम ने पुनः जनमत, कल्याण किया।

गीता सार

त्रेतायुग में राम, द्वापर में कृष्ण,
है एक ही विष्णु के अवतार,

आदि अनंत अगोचर श्रीराम ने,

कृष्ण रूप में दिया गीता ज्ञान सार।

गीता सुनकर न होता हर्ष विषाद,
कर्म पर जोर दिया वही जाना साथ,

कृष्ण वाणी में जीवन की सत्यता,
शरीर नश्वर आत्मा की अमरता।

कर्म करने का रखना है अधिकार,
फल मिलेगा जीव को उसी के अनुसार,

जो हुआ अच्छा हुआ विश्वास करो,
जो हो रहा वह भी अच्छा रखो आस।

जो होगा वह भी अच्छा ही होगा,
क्यों रोते जग में क्या हुआ खोटा,

नहीं कुछ लाये थे और न ही कुछ खोया,
व्यर्थ की बातों में न करना मन छोटा।

न कुछ यहाँ से पैदा किया न नष्ट किया,
लेन देन का सारा हिसाब यही पूरा किया,

खाली हाथ आये थे, खाली हाथ ही जाना,
फिर क्यों अपना या दूजे का दिल दुखाना।

आज जिस पर कर रहे तुम राज,
वह कल और किसी का था साज,

कल किसी और का हो जायेगा यारो,
इस पर न खेद करो न ही सोच करो।

परिवर्तन ही सृष्टि का शाश्वत नियम,
बस अच्छे कर्म करो न खोना संयम,

बस याद करो भगवान कृष्ण और श्रीराम,
बाकी सब छोड़ दो उस परमात्मा के नाम।

मेरा अवगुण भरा है शरीर

मेरा अवगुण भरा है शरीर, राम तुम्हीं तारोगे।

नहीं आती पूजा पाठ तप आदि,
जनम जनम का मैं अपराधी।
मैं तो बेगुण बेपीर, राम तुम्ही तारोगे।। मेरा।।

भवसागर के बीच खड़ा हूँ,
दुनियादारी का चक्कर जड़ा हूँ।
मेरे पाँव पडी जंजीर, राम तुम्ही तारोगे।। मेरा।।

भरे भंडार से दान न कीन्हा,
पुन्य कर्म भी कुछ न कीन्हा।
अब तो आवे रो रो नीर, राम तुम्ही तारोगे।। मेरा।।

बार बार यहाँ आना जाना,
जनम जनम का ताना बाना।
मेरी उलझ गई तकदीर, राम तुम्ही तारोगे।।
मेरा अवगुण भरा है शरीर, राम तुम्ही तारोगे।।